Kai Lalmbai Mahavidyalaya IQAC PAROLA Dist. Jalgaon

मध्य भारती

(MADHYA BHARTI)

Humanities and Social Science Journal

ISSN No. 0974-0066

UGC CARE (Group I) Journal

(Volume 83, No. 07, January-June: 2023)

Editor in Chief

Prof. (Dr.) Ambikaadas Sharma

Editor

Prof. Bhawatosh Indrguru

Prof. Brijesh Srivastava

Dr. Aashutosh Mishra

Volume Editor

Dr. Chhabil Mehar

Dr. Harising Gaur University

Sagar (MP) – 470003

Email – madhyabharti2016@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

स्वातंत्र्योत्तर चंद्रपूर जिल्हयातील आंबेडकरी चळवळीतील महिला शिलेदार 249
प्रा. प्रफुल एम. राजुवाडे

भारतीय संविधान के निर्माण में महिलाओं का योगदान 252
डॉ. दीपक (कला) विश्वासराव पाटील

नारी के आत्माभिमान और अस्तित्व को नई दिशा देते उपन्यास 256
प्रा. डॉ. विजय श्रावण घुगे

महिला सक्षमीकरण: समकालीन भारताच्या लोकशाही परिप्रेक्ष्यातून चिकित्सक अभ्यास 259
अवित रघुनाथ पाटील,

SOCIAL CHANGES THROUGH EDUCATE GIRL CHILD 263
Dr. Vandana V. Fulzele

A STUDY OF AWARENESS OF NATIONAL EDUCATION POLICY 2020 OF SECONDARY LEVEL TEACHERS 269
Dr. Priya Narendra Kurkure

Scanned with OKEN Scanner

मध्य भारती (Madhya Bharti)
मानविकी एवं समाजविज्ञान की शोध-पत्रिका

UGC CARE (Group I) Journal
ISSN: 0974-0066

"नारी के आत्माभिमान और अस्तित्व को नई दिशा देते उपन्यास"

प्रा. डॉ. विजय श्रावण घुगे, हिंदी विभाग, राणी लक्ष्मीवाई महाविद्यालय, पारोळा जि. जलगाव

==========

सारांश :-

नारी-विमर्श का साहित्यकार उसे ही माना जाएगा, जिसके हृदय में नारी के प्रति सहानुभूति व समानुभूति हो अर्थात जो नारी-हृदय में पैठ कर सकता हो, जो नारी की कसक को पहचानता हो, जो नारी-भावों की अतल गहराइयों में उतर सकता हो। अर्थात जिसने नारी के जीवन को जिया है या जो हृदय नारी-सी कोमलता लिए हो। यह जरूरी नहीं कि नारी-जीवन के उजले पक्ष को रेखांकित करने वाला साहित्यकार कहलाए, चाहे वह लेखक पुरूष हो या महिला। नारी संपूर्ण आवादी का आधा भाग है। वह एक ऐसी आधी दुनिया है, जो प्रत्येक कदम पर पुरूष द्वारा नियमित और अनुशासित होती रही है। प्राय: सभी प्राचीन सभ्यताओं में नारी की स्थिती सम्मानपूर्वक थी। अत्यंत प्राचीन वौदिक सभ्यता में आर्य नारी की दशा बहुत ही सम्मानपूर्ण थी। ठीक उस नारी के आत्माभिमान और अस्तित्व को नई दिशा देने का कार्य महिला लेखिकाओं के उपन्यासों के माध्यम से होता हुवा दिखाई देता है।

हिंदी की कई महिला लेखिकाओं ने अपनी लेखनी के माध्यम से अपने क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किए है। इन महिलाओं में मन्नू भंडारी, कृष्णा सोवती, कृष्णा अग्निहोत्री, ममता कालिया, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा, चित्र मुदगल, अलका सरावगी, शशिप्रभा, जमा जदवानी, नमिता सिंह, मधु कांकरिया, सुधा अरोड़ा और प्रभा खेतान इत्यादि नाम सुप्रसिद्ध रहे हैं।

महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में नारी विमर्श के माध्यम से नारी अधिकार, उसके आत्माभिमान, अस्तित्व और स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष को दर्शाते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए है, जो आज भी प्रासंगिक लगते है।

मुख्य संबोध - चिरंतन, लोकप्रियता, विमर्श, उपन्यास, आबादी, आत्माभिमान, अस्तित्व, विचार, रचना, विजेता, प्रासंगिक, उत्पीडन, नवोन्मेष आदि।

प्रस्तावना :-

साहित्य को समाज का आईना कहा जाता है, क्योंकि साहित्य में समाज का यथार्थ चित्रण मिलता है। चाहे वह समाज भारत का हो या भारत के बाहर अन्य किसी भी देश का उसमें चित्रित किया गया समाजजीवन हमारे सामने अपनी यथार्थ झाँकी प्रस्तुत करता है। नारी-पुरूष जीवन को सदैव से ही प्रभावित करती आई है। विश्वामित्र ने मेनका से, दुष्यंत ने शकुंतला से, जहाँगीर ने नूरजहाँ से हार मान ली थी। ये पुरूष नारी की अपार शक्ति के आगे घुटने टेकने के लिए विवश हो चुके थे। वस्तुत: नारी समाज का वह अंग है, जो व्यक्ति और समाज के स्तर पर अनेक भूमिकाओं का एक साथ निर्वाह करती है। एक ही समय में वह एक से अधिक रूपों में जीवंत रहती है। प्रभा खेतान के उपन्यास नारी के आत्माभिमान और अस्तित्व को नई दिशा देते हुए आगे वढ़ते है।

विषय प्रवेश :-

साहित्यिक कृतियों में साहित्यकार का व्यक्तित्व निहित होता है और बडे गहराई तक के विचार पाठक को साहित्यकार अपनी रचना के माध्यम से देने का प्रयास करता है। साहित्यकार समाज का अभिन्न अंग होता है। यही सब विशिष्टताएँ उन्हें एक सफल साहित्यकार सिद्ध करती है। हिंदी साहित्य में अनेक परिवर्तन हुए। साहित्य की धारा नारी विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श और अल्पसंख्याक विमर्श के रूप में प्रवाहित होती रही। नारी ने हर काल में अपनी भूमिका का निर्वहन बडी ही प्रामाणिकता के साथ किया हुआ दिखाई देता है। हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त नारीसंबंधी कालजयी विचारों से यह स्पष्ट होता है।

महादेवी वर्मा कहती है कि, "स्त्री संस्था है। स्त्री को इस सामाजिक सांस्कृतिक भूमि की जरूरत हैं जहाँ वह अपने अस्तित्व का नवोन्मेष महसूस कर सकती हैं। खुली मानसिकता का एहसास कर सकती है। अपनी अस्मिता को पूर्णरूप से अपना सकती है। स्त्री को अपना स्थान, अपना सत्व चाहिए।"[1] अपने आत्माभिमानी स्वरूप को अपने सहअस्तित्व से जुडकर जव उसने अपने आपको पहचाना तो उसे यह एहसास हो गया कि इस पुरूष प्रधान सामाजिक मानदण्डों को तोडकर नारी शक्ति का परिचय देने का अब समय आ गया हैं।

भारतीय उपनिषद काल में गार्गी, मैत्रेयी से इसका सूत्रपात हुआ फिर मीराबाई, यशोधरा, सावित्रीबाई फुले, ॲनी वेझेंट, रमाबाई आदि कई महिलाओं ने अपने अस्तित्व के माध्यम से समाज को दिशा दी और नारी अस्मिता की रक्षा में अपने

Scanned with OKEN Scanner